



LOVELY & LAVISH

VOL : 03



Exotic

LOVELY & LAVISH

VOL : 03



S4UTM
by
SHIVALI

Exotic 303

S4U
by
SHIVALI



Exotic 305

S4UTM
by
SHIVALI

Exotic 304

श्रीशुककृत-गोपवासवशोने
वचर^(१)तायामपि विदुरस्य जीवे^(२)दित्यारभ्यः
आवहारश्रवणोपपत्तिकं वशिष्ठ-तुर्गमुच्यते । वाल्मीकिविरचितं तत्र यः पाठयति
स गोरक्ष्य वाणिज्यं कुसीदं निशामिति वचनमस्मिन् ।
मुनिवशा तत्र वयं मोक्षतयो-
नमः ।

S4U
SHIVALI



Exotic 306

रन्ध्रः "कृषिभारद्वयं
। वार्ता चतुर्विधा तत्र य
ब्रजराजं प्रति श्रीकृष्णवचने तथेवा-
गो-विप्रेति श्रीभाककन-गोपवासवर्गिने

S4U
by
SHIVALI



Exotic 301

S4UTM
SHIVALI



Exotic 302



Exotic 301



Exotic 302



Exotic 303



Exotic 304



Exotic 305



Exotic 306

S4U™
by
SHIVALI

Exotic
LOVELY & LAVISH VOL: 03